International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

बघेलखण्ड के प्रमुख लोकगीतो का अध्ययन

राघवेन्द्र सिंह
शोधकर्ता , अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.)

डॉ. विक्रम सिंह बघेल
शोध पर्यवेक्षक,अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.)

सारांश

बघेली के क्षेत्र और सीमाओं की तरह इसके लोक संगीत का रूप भी पर्याप्त व्यापक जान पड़ता है। जिस प्रकार बघेली बोली की अपनी खास टोन, लहजा, तरीका और बांकपन है। एक खास ठसक है। एक खास तरह की मिठास है और लचीलापन है। उसी तरह की विशेषता बघेली के लोक संगीत में दिखाई देती है। कहना न होगा कि किन्हीं और अंचल की लोक संस्कृति की भी अपनी विशिष्टताएं हैं और पहचान भी है। उसकी अपनी खनक है। भौगोलिक दृष्टि से बघेली बोली और संस्कृति का अन्य क्षेत्रों में मिलन बिंदु है। जहां वह अन्य संस्कृति से रूबरू होती है, उनसे कुछ लेती है। उन्हें कुछ देती है। अपने नए रूपाकार बनाती है और अन्यों के प्रभाव से अपनी नई छवि भी बनाती है। उदाहरण के लिए नागौद से पन्ना की ओर, मऊगंज से मिर्जापुर की ओर और चाकघाट से इलाहाबाद की ओर, शहडोल, अनूपपुर से लग छत्तीसगढ़ी इलाके की ओर, उधर बांदा, मानिकपुर की तरफ एक-दूसरे से मिलने, समोने और प्रभावित करने के रूपों में विस्तार होता है। यह लोक संगीत अलग-अलग तरह से सक्रिय होते हुए भी कहीं न कहीं मिलता है।

मुख्यशब्द- बघेलखण्ड, प्रमुख लोकगीत, बघेली बोली, संस्कृति, लोक संगीत

प्रस्तावना

बघेली लोकसंगीत यूं कहा जाए तो बघलेखंड की लोक संस्कृति के आचार एवं अनुरूप ही संवाद करता है। बघलेखंड के या यूं कहें तो विंध्य के संदर्भ में महाकवि तुलसी ने कहा था- 'विंध्य के वासी उदासी महा' ठीक इसी तरह बघेली लोक संगीत (की अनुभूति) का आभास होता है।

एकदम उदात्त मन की निर्वेद में की जाने वाली अनुभूति बघेली लोक संगीत में मौजूद है। ऐसा लगता है जैसे एक किस्म का वैराग्य बघेली लोक संगीत का स्थायी भाव है। बघेली लोक संगीत के अनेक गीतों में यही वैराग्य का भाव व्याप्त है और सांगीतिक दृष्टि से यह वैराग्य का पुट स्वरों की चाल और लय ताल की संरचना द्वारा यहां परिलक्षित होती है। स्वरों की अठखेलियां यहां पहुतायत से नदारद है, लेकिन

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

अठखेलियां नदारद होने का यह कतई मतलब न निकाला जाए कि चापल्य का भाव यहां के गीतों में नहीं है। कई गीत चपलता से परिपूर्ण है, पर यह चपलता भावों में मौजूद है, गायकी में मौजूद है परंतु स्वर समूह और स्वर संगतियों के मद्देनजर यहां यह बात मानी जा सकती है कि गीत के भावों में हालांकि चापल्य मौजूद है पर जब यह गीत गायकी द्वारा ध्वनित होते हैं, तब इस इलाके की पूरे बघेलखंड की मूलभावना यानी उदासी भाव अर्थात निर्लिप्तता का पुट, हर प्रकार से वैराग्य भाव को लक्ष्य करता हुआ जान पड़ता है-

दरस की तो बेला भई रे,

बेला भई रे पट खोलो

छबीले भैरव नाथ हो। दर की तो... बेला।

मूलरूप से यह वैराग्य भाव का गीत है। भक्ति रस में डूबा हुआ गीत है। संगीतज्ञों की राय में यह भोलादानी गीत राग पीलू में निबद्ध है। पीलू राग इस गीत में या यूं कहें कि अधिकांश गीतों में ऐसे भाव उत्पन्न करने में सक्षम है, जो पीत रंग में सराबोर कर सकते हैं। पीत यानी पीला रंग एक प्रकार से शुभता और प्रीति का रंग है। इस भोलादानी गीत के सिर्फ बोल ही नहीं वरन स्वर विन्यास और पीलू राग का चलन जो जनसामान्य की भक्ति के रंग में वैराग्य के भाव में और प्रीति के रस में भिगो कर रख देता है। बघेली लोक के गैलहाई, अहिरहाई, बिरहा, दादर आदि अनेक गीत सुनने पर ऐसे प्रतीत होते हैं, जैसे किसी साधु ने, किसी योगी ने, किसी तपी ने अपने नितांत वैराग्य में इन गीतों की अनुभूति की होगी। अपने मन को, मन की वेदना, राग और जीवन के तादात्म्य के साथ एकात्म करने के बाद किसी योगी ने गीतों को लोक में प्रस्तुत किया होगा। इसका एक उदाहरण इस रूप में रखा जा सकता है- 'निकरि चला दइ टटिया हो कउने माया मां अटके हैं प्रान हो।'

बघेलखंड के बिरहा की तो बात ही अलग है। एक तरह से इसे प्रबंधित गायकी का मूल भी माना जा सकता है। यदि नहीं भी हो, तो कम से कम इस गीत की आत्मा सर्वस्वीकार्य रूप से सर्वांग, सुसज्जित संगीत प्रबंध की अद्भुत कृति कही जा सकती है। किसी भी बिरहा के विलम्बित और द्रुत लय के दोनों भाग, जिन्हें ठाह और उचट्टा भी कहा जाता है, बिल्कुल बड़े ख्याल और छोटे ख्याल की तरह ही निबद्ध किए हुए लगते हैं। भाव, रस-संगीत, प्रबंध लयकारी आदि तत्वों के मद्देनजर बिरहा को बघेली लोक संगीत का प्रमुख प्रतिनिधि गीत माना जा सकता है। एक ही नारदीय फाग में लगभग पांच या छः ताल बजाते हैं। जैसे दादर, रूपक, कहरवा, दीपचंदी आदि हैं। इसको गाते समय मंडली के लोग खड़े होकर नाचते भी हैं।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

ठीक इसी प्रकार की तत्व मीमांसा बघेली फाग के कई रूपों विशेष तौर पर नारदीय फाग के बारे में की जाती है। बघेली संगीत के जानकार बताते हैं कि नारदीय फाग बिल्कुल सधी हुई शास्त्रीय गायकी की प्रस्तुति की तरह ही रस, भाव, लय, स्वर संकल्पना, चमत्कार आदि के मामले में कहीं भी कमतर नहीं आंकी जा सकती है।

बघेली लोकसंगीत में एक गीत है बिआह (ब्याह)। बियाह अपने आप में एक अनोखी सांगीतिक रचना है। विवाह में कन्यादान के आसपास गाए जाने वाले इस गीत की सबसे बड़ी खासियत यह है कि कोई भी चमत्कारिक पहलू न होते हुए भी यह भावों की धारा को अविरल बहा सकने में समर्थ है। इस गीत के प्रसंग में बेटी के ब्याह जाने से उत्पन्न हो रहे मनोभावों का सटीक चित्रण करते हैं। वैवाहिक कार्यक्रमों में इस गीत के गाए जाने वाले समय पर बहुधा मैंने उपस्थित परिजनों की अविरल अश्रु धाराएं देखी हैं। कभी-कभी तो वर पक्ष के लोग भी भावों में डूबकर अश्रु बहाते हुए देखे गए हैं। जब तिलक चढ़ जाता है, यह फलदान हो जाता है, तब से प्रतिदिन शाम के समय गांव में बोलावा होता है। प्रत्येक घर से। और सभी स्त्रियां मिलकर विवाह, सोहाब, बनरा एवं अंजुरी गीत गाती हैं। यदि लड़के की शादी है तो बन्नो, सोहाग, अंजुरी और विवाह गीत गाए जाते हैं। घर में विवाहोत्सव का वातावरण बनाने में इन गीतों की अहम भूमिका है। इसीलिए गांवों में यह कहावत प्रचलित है-'गाये-गाये होइ बिआह।'

एक और खास बात है इस बियाह गीत की यह गीत काल में निबद्ध नहीं होता है। कई बार इसे सुनते ही बरबस मुझे पंजाबी लोकगीत 'हीर' की याद आ जाती है। पंजाबी हीर जिस तरह से भावों का सागर उंड़ेल कर रख देता है, ठीक वैसे ही तासीर हमारे बघेली बियाह में भी है। फर्क सिर्फ इतना है कि पंजाबी हीर अब विश्वप्रसिद्ध है और हमारे बघेली विवाह अपने अंचल में ही बेगाने हैं। उनकी भाव प्रकाशन क्षमता और व्याप्ति को ठीक से पहचान नहीं मिल सकी है।

विवाह गीत:

बघेली विवाहगीत भारतीय साहित्य और संगीत की विशेष विरासत में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन गीतों के माध्यम से बघेली समाज में विवाह के उत्सव का स्वागत किया जाता है। ये गाने विवाह के रस्मों, परम्पराओं और लोकजीवन की रंगीनता को दर्शाते हैं। इन गानों में प्रेम, संघर्ष, साझेदारी, और समृद्धि के भाव उत्कृष्टता से प्रकट होते हैं। बघेली विवाहगीत न केवल एक सामाजिक घटना को समृद्ध करते हैं, बल्कि वे बघेली संस्कृति के प्रति भक्ति और सम्मान का अभिव्यक्ति भी हैं। इन गानों की धुन, बोल और ताल उनकी शैली और विविधता

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

में भिन्नता लाते हैं, जिससे वे सुनने वालों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। बघेली विवाहगीत न केवल एक समाजिक परिवार के लिए महत्वपूर्ण होते हैं, बल्कि वे उत्सव के माहौल को भी अद्वितीयता प्रदान करते हैं और लोगों को साथ मिलकर खुशियों का आनंद लेने का अवसर देते हैं।

❖ तेल के गीत

➢ सो आज मेरे रामजू कौ तेलो चढ़त है

सो आज मेरे रामजू कौ तेलो चढ़त है।

तेलो चढ़त है फुलेल चढ़त है

सो आज मेरे रामजू कौ तेलो चढ़त है।

सोने कटोरा में तेलो भरायौ

सो हरदी मिला कै कैसो झलकत है।

सो आज मेरे रामजू को...

भाभी ने मिल तेल चढ़ायो,

सो नारिन मंगल गीत मढ़त है।

सो आज मेरे रामजू को...

➢ चढ़ गयौ तेल फुलेल छुटक रई पाँखुरियाँ

चढ़ गयौ तेल फुलेल छुटक रई पाँखुरियाँ।

काये कौ तेल फुलेल काये कीं पाँखुरियाँ।

चम्पे कौ तेल फुलेल रूपे की पाखुरियाँ।

को ल्याऔ तेल फुलेल को ल्याऔ पाखुरियाँ।

तेलन ल्याई तेल फुलेल मालिन ल्याई पाखुरियाँ।

भौजी ने चढ़ाऔ तेल वीरन राय बैंहदुलियाँ।

चढ़ गयौ तेल फुलेल छुटक रईं पाखुरियाँ।

❖ माटी

बघेली विवाह माटी गीत बघेली समुदाय के विवाह के उत्सव के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। ये गीत विवाह के रस्मों और परंपराओं को मनाने के लिए गाए जाते हैं, जिसमें विवाही समूह के सदस्य और समुदाय के लोग भाग लेते हैं। बघेली विवाह माटी गीतों में माटी और प्राकृतिक सामग्री के महत्व को संवाद के माध्यम से उजागर किया जाता है। इन गीतों में खेतों की सुंदरता, मौसम का महत्व, और खेती से जुड़े भाव व्यक्त किए जाते हैं। विवाह में उत्सव के मौके पर ये गीत गाए जाते हैं और लोगों को खुशियों की अनुभूति कराते हैं। बघेली विवाह माटी गीतों की मधुर धुन और उत्साहवादी बोलों में समुदाय की एकता और सामाजिक उत्साह का अभिव्यक्ति होता है। ये गीत समुदाय के सदस्यों को एक-दूसरे के साथ जोड़ते हैं और उत्सव के माहौल को और भी रंगीन बनाते हैं।

माटी कोरे गेल छिनरो पार गंगा हे।

गजनवटा में चोरवले आयल सोरह गो भतार हे॥1॥

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

घर के भतार पूछे, कवन-कवन जात हे।

चार गो त जोलहा-धुनिया, चार राजपूत हे॥2॥

चार गो त मुसहर बड़ मजगूत हे।

भले छिनरो, भले कोरे गेल हे॥3॥

'कहवां के पियर माटी'- मटकोर का गीत है . शादी की विधिवत शुरूआत मटकोर से होती है. इसके लिए पहले महिलाएं कुदाल लेकर मिट्टी लाने घर से बाहर जाती हैं. जो मिट्टी लाई जाती है उससे आंगन का मंडप तैयार किया जाता हैइसी मंडप में शादी की रस्में होती हैं. . जिन लोगों ने बचपन में मटकोर की रस्म देखी है, उनके लिए ये मजेदार अनुभव रहा हैघर . की चारदीवारी से बाहर उन्मुक्त होकर महिलाएं आपस में हास-परिहास करती हैं. गीतों के माध्यम से रिश्तेदारों को गाली और उलाहना दिया जाता हैखूब मस्ती होती है. . पीढ़ी दर पीढ़ी महिलाओं ने मटकोर के इस गीत को आवाज दी है,

❖ मंडपाच्छादन

बघेली विवाह मंडप गीत बघेली समुदाय के विवाह समारोह के एक महत्वपूर्ण हिस्से को सजाने और रंगीन बनाने का माध्यम हैं। ये गीत विवाही मंडप में बजाए जाते हैं और विवाह समारोह के माहौल को और भी उत्सवी बनाते हैं। मंडप गीतों में प्रेम, सौहार्द, आदर, और खुशी के भाव व्यक्त किए जाते हैं। इन गीतों के बोल मंडप की सजावट और साजसज्जा के - बारे में होते हैं, जो विवाही समुदाय के सदस्यों के द्वारा मंडप को सजाने में मदद करते हैं। गाये जाने वाले गीत विवाह मंडप के आसपास आने वाले सभी लोगों को सामूहिक रूप से जोड़ते हैं और समारोह के रंगीनीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन गीतों की मधुर धुन और भावनात्मक बोलों में समुदाय की एकता और सामाजिक बंधन का प्रतीक होता है, जो विवाह समारोह को और भी अद्वितीय बनाता है।

हरे मंडप के तरें देख जाव जू चढ़ै सियाजू कौ चढ़ाव जू।

पंडित ने शुभ समय बतायौ, रूच रूच मोतिन चौक पुरायौ,

पूजन कौ सामान मंगायौ, पाछें सीता कों बुलवायौ

प्रथम गौरी सुत पूजन करवाव जू। चढ़ै सिया जू...

दशरथ चतुर सुजान सुर नर मुनि संग में गुणवान

ल्याये तीर चढ़ाव महान, ताकौ करो न जात बखान

झलक रहौ प्रेम प्रथा को प्रभाव जू। चढ़े सिया जू...

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

कन्या के हाथन सुखदाई, बुध ने बेद रीत करवाई

शुभ सेंदुर से माँग भरवाई शोभा कछु बरनी ना जाई

बसन भूषन कौ टिपन्ना खुलाव जू। चढ़ै सिया जू...

घांघर रम्य रेशमी बारौ लामौं चोड़ौ घूम घुमारो,

गोटा कामदार अति प्यारौ, डोरा बड़ौ मोल कौ डारौ

पक्की जरकस कौ बीच में भराव जू। चढ़ै सिया जू...

सारी जरतारी अति प्यारी तामें मोतिन टकी किनारी

है अनमोल खलाई प्यारी पनरस शोभा देवै भारी

गठजोरे कौ पिछौरा उड़ाव जू। चढ़े...

सिर पै सीसफूल दरसावत बर बेंदिया विचित्र सुहावत

बेंदा सुख सोभा सरसावत कानन कन्नफूल मन भावत

हीरा पन्ना कौ जड़ौं है जुड़ाव जू। चढ़े सिया जू...

मोतिन माला और तिधानो चंपा कली ठुसी सद्धानों

सुन्दर हार हमेल सुहानो, गानौ और सुनाऊँ कानौ...

नीकौ बाजूबंद बरन कौ बनाव जू। चढ़े सिया जू...

गुंजे गजरा औ गजरिया केकना बगुवाँ अरू बंगालियाँ

चूरा चारू पटेला चुरियाँ अंगुरिन छल्ला छाप मुदरियाँ

नव रतन कौ जमौ है जमाव जू। चढ़े सिया जू...

पॉयन पायजेब पैजनिया जिनमें सोहत है रून झुनिया

दस-आँगुरो सु दसउ अंगुरिया माहुर लागौ लगा लगनियाँ

दास कहैं जुर मिल गुन गाव जू। चढ़े सिया जू...

❖ सुहाग

बघेली विवाह सुहाग गीत बघेली समुदाय के विवाह समारोह में बजाए जाते हैं और विवाही स्त्री को उसके सुहाग की शुभकामनाएं देते हैं। ये गीत विवाही महिला की सौंदर्य और सम्मान को उत्कृष्टता से प्रस्तुत करते हैं। सुहाग गीतों में प्रेम, शुभकामनाएं, और प्रार्थना के भाव व्यक्त होते हैं। इन गीतों के बोल महिला की सौंदर्य और धैर्य की प्रशंसा करते हैं, जो विवाह के नए युग में उसके लिए एक नई जीवन की शुरुआत होती है। गाये जाने वाले गीत समारोह के वातावरण को आनंददायक बनाते हैं और समुदाय के सदस्यों को आनंद और उत्साह से

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

भर देते हैं। इन गीतों की मधुर धुन और भावनात्मक बोलों में समुदाय की एकता और परम्परागत भारतीय संस्कृति का महत्व दर्शाया जाता है, जो विवाह समारोह को और भी रोमांचक और समृद्ध बनाता है।

सुहाग लेने के गीत

1. बेटी ठाड़ी किवाड़ की ओट सुहाग दें रई पार्वती

बेटी ठाड़ी किवाड़ की ओट सुहाग दें रई पार्वती।

आजी तुम हो जाओ तैयार

लै लो गजमोतिन के थार, बई में बूँदा रख लो चार

अपनी सेंदुर सें भर लो माँग।

सुहाग दें रई पार्वती।

मैया तुम हो जाओ तैयार

लैलो हीरा मानिक के थार, बई में रख लो बूँदा चार

अपनी सेंदुर सें भर लो माँग

सुहाग दें रई पार्वती।

बेटी ठाड़ीं किवाड़ की ओट सुहाग दें रई पार्वती।

2. हम वर पाये जैसें मानिक हीरा मानिक हीरा जैसें जरद नगीना

हम वर पाये जैसें मानिक हीरा। मानिक हीरा जैसें जरद नगीना।

हँसत खेलत बेटी आजुल घर आई। सो देओ मेरी आजी सुहाग कौ वीरा।

चन्द्र वदन आजी मुसकानी। सो लेओ मेरी बेटी सुहाग कौ वीरा।

तुम वर पाये जैसें मानिक हीरा। मानिक हीरा जैसें जरद नगीना।

3. श्याम वर के लाने बेटी ठाड़ी बखरी

श्याम वर के लाने बेटी ठाड़ी बखरी।

वे तो खरिया दुफरिया बेटी ठाड़ी बखरी।

उनके आजुल ने लगाये सुहाग बिरछा।

उनकी आजी रानी सींचन चली भर गडुआ।

वे तो श्याम वर के...

उनके बाबुल ने लगाये सुहाग बिरछा

उनकी मैया रानी सींचन चलीं भर गडुआ।

वे तो खरिया दुफरिया बेटी ठाड़ी बखरी।

श्याम वर के लाने...

उनके काका ने लगाये सुहाग बिरछा।

उनकी काकी रानी सींचन चलीं भर गडुआ।

श्याम वर के लाने...

उनके भैया ने लगाये सुहाग बिरछा।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

उनकी भौजीं रानी सींचन चलीं भर गडुआ।

वे तो खरिया दुफरिया...

4. ऐसी री सुहाग मैंने घोर घोर गारौ

ऐसी री सुहाग मैंने घोर घोर गारौ।

सुहाग की क्यारी उनके बाबुल ने लगाई।

सो सींचे मैया रानी सिंचावै सिया जानकी।

टीका रोरी में छवि लागी,

माहुर मेंहदी में छवि लागी।

अनवट बिछया में छवि लागी।

ऐसो री सुहाग मैंने घोर-घोर गारौ।

सुहाग की क्यारी उनके काकुल ने लगाई।

सो सींचे काकी रानी सिंचावै सिया जानकी।

ऐसों री सुहाग मैंने...

निष्कर्ष

बघेलखण्ड के प्रमुख लोकगीतों की धरोहर भारतीय सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है। ये गीत बघेलखण्ड के संगीतीय और सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और इस क्षेत्र की जनता की भावनाओं, जीवनशैली और परंपराओं को प्रतिबिम्बित करते हैं। इन गीतों में स्थानीय विषयों पर ज्ञान, प्रेम, विश्वास और प्रकृति के साथ-साथ समाजिक संदेश भी समाहित होते हैं। बगेलखण्डी लोकगीतों में संगीत का सार्थक प्रयोग, भावनात्मक गहराई और साहित्यिक गुणधर्म प्रमुख होते हैं, जिन्हें लोकल भाषा और धुनों के माध्यम से सुनाया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

दुबे, एस. के. (2001). बघेलखंड की लोक संस्कृतिः एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य। अनामिका प्रकाशक और वितरक।

सिंह, आर. (2005). बघेलखंड की सांस्कृतिक विरासत। नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत।

शर्मा, एस. (2010). बघेलखंड के लोक नृत्य। आदि प्रकाशन।

तिवारी, ए. (2013). बघेलखंड की ग्रामीण परंपराएँ। राजकमल प्रकाशन।

मिश्रा, पी. (2016). बघेलखंड में धार्मिक त्योहार। मनोज प्रकाशन।

वर्मा, वीके. (2018). बघेलखंड की पारंपरिक कलाएँ। साहित्य भवन प्रकाशन।

चतुर्वेदी, एम. (2020). बघेलखंड की सांस्कृतिक पहचान और लोककथाएँ। रिसर्च इंडिया प्रेस।

पांडे, ए. के. (2003). बघेलखंड का लोक संगीत। वाणी प्रकाशन।

गुप्ता, आर. (2007). बघेलखंड के मिथक और किंवदंतियाँ। डायमंड पॉकेट बुक्स।

त्रिपाठी बी. पी. (2011). बघेलखंड में पवित्र अनुष्ठान। प्रभात प्रकाशन।

सिंह, एस. (2014). बघेलखंड की कला और शिल्प परंपराएँ। कल्पाज़ प्रकाशन।

मिश्रा, एन. (2017). बघेलखंड की लोक कथाएँ। मनोहर पब्लिशर्स

वर्मा, एस. (2019). बघेलखंड का पारंपरिक व्यंजन। अटलांटिक प्रकाशक और वितरक।

सक्सेना, आर. (2002). बघेलखंड में त्यौहार और उत्सव। रूपा पब्लिकेशंस इंडिया।

तिवारी, जी. (2006). बघेलखंड की लोककथाएँ और मौखिक परंपराएँ। ईस्टर्न बुक लिंकर्स।

पांडे, वी. (2012). ग्रामीण बघेलखंड में सांस्कृतिक प्रथाएँ। मानस प्रकाशन।

मिश्रा, आरके। (2015). बघेलखंड का नृजातीय संगीत विज्ञान। ज्ञान पब्लिशिंग हाउस।

दुबे, ए. (2018). बघेलखंड में पारंपरिक उपचार प्रथाएँ। D.K. प्रिंटवर्ल्ड (पी) लिमिटेड